श्रीः ।

कन्याहितकारिणी ।

दोहा ।

जगतारण वाधाहरण, अंतर्यामी नाथ ॥
यह कारज पूरण करो, सदा नवाऊं माथ ॥ १ ॥
जो सहाय करिहो गुरू, तो होवे यह काज ॥
कन्या उपकारक समझ, करौं विनय महराज ॥ २ ॥

चौपाई ।

कन्या जब तुम होउ सयानी । माता ते सीखो शुभवानी ॥
दुर भाषा कबहूं जनि बोलो । ऊंच नीच निज उरमें तोलो ॥
जो सबते मृदु भाषण करिहो । तो सबकी प्यारी बनिरहिहो ॥
सकल लाड करिहैं अतिभारी । पिता और भ्राता महतारी ॥
छोटे वडो कुटुंब में जानो । तिहि प्रकार ताको सनमानो ॥
जो कोऊ कछु कारज कहिहैं । करहु ताहि चह दुख सहिलैहैं ॥
रूखो उत्तर कबहुँ न देहू । जो कह कोउ ताको सुनलेहू ॥
सदा रहो सबते अतिप्यारी । कटुक वचन मुखते न उचारी ॥
जे परोस वासी नर नारी । तिनते प्रीतिकरो अतिभारी ॥

अरु राखो ऐसा वर्तावा । सब राखहिं तुम पर अतिभावा॥
दोहा–जे परोस मिहमानकोउ, आवें तुम्हरे स्थान ॥
प्रथम मधुर उच्चारते, करु उनको सन्मान ॥ ३ ॥
फेर कुशल पूँछो इनकेरी । प्रीति प्रगट निज करो घनेरी ॥
खान पानहित पुँछहु नीका । बढहिंप्रेम जाते तेहिजीका ॥
जब लगि वे तब घरमें रहिहैं । तब लगतुमअनुचित नहिं कहिहैं॥
मातु तुम्हारी करे रसोई । जब सहाय तुम करो जो होई ॥
कहु पाहुन भोजन को आओ । तुम उन हित निर्मलजल लाओ॥
जब पाहुन भोजन करजावे । पान देहु जो मुखमें खावे ॥
अरु पाहुन घर जावन लागे । कहु अस वचन प्रेमअतिपागे ।
कुशल रहो प्रियअहो सदाई । तुम्हरी कृपा कुशल यहँ भाई॥
काम काज सब लिखा पठैयो । समाचार प्रिय देवत रहियो ॥
जब पाहुन निज घर चलजैहैं । वो तुम्हरी असि शोभाकरिहैं ॥
दोहा–माता पितु आदेश को, मानु सदा हित जान ॥
सुतातिन्होंकी सेवमें, सदा राखियो ध्यान ॥४॥
खेलो उन सखियन में जाई । जो सुशील विद्वान जनाई ॥
जो न कहहिं मुखते दुरवाचा । अरु कबहूं छोडे नहिं सांचा॥
उत्तम खेल सदा जिनको प्रिय । कलह कुबुद्धि नहीं तिनके हिय॥
उनते करहु प्रीति तुमगाढी । कुटिलनके सँग रहो न ठाढी ॥

उरमें कुटिलाई मत ठानो । सखियन को भगनी सम जानो॥
अधिक२ उर प्रीति बढाओ । अरु कुटेवको दूर भगावो ॥
गाओ सबमिल उत्तम गाना । मधुर मनोहर मंगलनाना ॥
अरु सीखो सारी चतुराई । जो या जगमें लेहु भलाई ॥
जो खेलोगी धूल रमाई । स्वच्छ देह मैली हुइ जाई ॥
बिगरहिं निर्मल वस्त्र तुम्हारे । नाहिं आने देवे कोउ द्वारे ॥
दोहा—सुंदर मुख देखे तऊ, करे तुम्हारो प्यार॥
गोदीमें राखे सकल, दूनों करे दुलार ॥ ५ ॥
प्रहर रात जब बीती जानो । तब सोवनकी मनमें ठानो ॥
पुनि शुभ समय भोर जब ह्वहई । पक्षी मधुर वचन तब कहई॥
तब तुम उठिबैठी हुइ जाओ । प्रभुके सब सुंदर यश गाओ ॥
फेर विचार लेहु वह कामा । जो करिहो दिनमें निजधामा ॥
अरु झाडू घर मांहिं लगाओ।शौच जाय निर्मल हुइजाओ ॥
स्वच्छ करो घरको इहिभांती ।वहां मलिनता कछु न लखाती॥
निर्मल जलसे मज्जन करिहो।स्वच्छवसन निज तनपर धरिहो॥
पुनि पुस्तक अपने कर लाओ। पिछला पाठ फेर पढ जाओ॥
संथा याद करो ता दिनकी । करो फेर जो इच्छा मनकी ॥
जब घरमें बन जाय रसोई । जीमों जितनी इच्छा होई ॥

ोहा–बहु भोजन पीडा करे, डारे बुद्धि नसाय॥
क्षीण अवस्था को करे, याते अति मत खाय॥६॥
ास सम्मुख आवे बनि भोजन। याते मत फेरो तुम लोचन॥
रु पुनि कछु जनि करो ढिठाई। भोजनते अति अरुचिजनाई॥
ाहिं उच्छिष्ट थालीमें राखो। अन्न देवको वृथा न नाखो॥
ोजनादिसे जब परवारो। तब विद्यालय मांहिं सिधारो॥
थम जाय तेहि करो प्रणामा। जो हो पाठकनी गुणधामा॥
ठो वा आसन पर जाई। जो प्रथमहिं तो दिया बताई॥
ुता होयँ तव कक्षा मांहीं। तिनते कछु बिगार भलनाहीं॥
ाते उनको अति प्रिय राखो। सुंदर वचन सकल ते भाखो॥
ुन्दर संथा देहु सुनाई। पाठकनी प्रसन्न ह्वै जाई॥
ाखहिं तुमपर प्रेम अपारा। कबहुँ न तुमको परे न मारा॥
ोहा–पुस्तक को अति प्यारसे, राखहु सुता सयान॥
तो तुम सब कन्यान में, पावहुगी बड मान॥७॥
ुस्तक पढो पूर मन लाई। भिन्न २ सब अर्थ जनाई॥
िना अर्थ कछु लाभ न होई। ताते तुम सीखो मन गोई॥
ुस्ताक्षर पर ध्यान लगाओ। बारबार लिखि उन्हें जमाओ॥
ब सुंदर अक्षर लिख लेहो। तब सब ठौर महा यश पैहो॥
ीखहु गणित सुता अति नीका। जो गृहस्थ में फलद अमीका॥

ग्रहणी सब घरकी रखवारी। ताते जान मुख्य इहि भारी।
जहँ पत्नी कछु गणित न जाने। तहँ लक्ष्मी नहिं रहे ठिकाने।
समझो लाभ हानि इहि भांती। किये परिश्रम तुच्छ जनाती।
पढो पूर भूगोल खगोला। ताते मन पावे नहिं डोला।
जो सीखहु इतिहास पुराना। तो जानोगी भेद महाना।

दोहा—बालावस्था में सुता, जो पढिहौ धरि ध्यान।
तो पावहुगी जगत में, विशद कीर्ति धन मान॥८॥

सीने में भी चित्त लगाओ। नाना विधिके वस्त्र बनाओ।
करो अधिक यामें चतुराई। पान फूल अरु बेल बनाई।
चित्र विचित्रके बटे काढो। होय जहां लग निज बुधबाढो।
जानि एक इहि कर्म प्रधाना। सुता होउ यामें गुणवाना।
मन माने निज वस्त्र बनाओ। तब कहु किमि दर्जी पे जाओ।
बचिहैं बडे दाम घर माहीं। अधिक वस्त्रभी जावे नाहीं।
तुम्हरे ढिग आवें बहु नारी। करें विनय मृदु वचन उचारी।
सुंदरि सीवहु वस्त्र हमारे। तो हम गुण मानेंगी भारे।
इहिविधि सब आवैं तुम्हेर प्रति। ऊंच नीच का भेद न लेखति।
निजचित्तमें राखो नरमाई। देवो सबके काज बनाई।

दोहा—आइ कहै कोऊ तुम्हें, नारि आपनो काम।
तो करि वाको प्रेमते, पुनि पठवो तोहिधाम॥९॥

ीखो भोजनकी विधि नाना। यहभी है इक कर्म प्रधाना॥
ब सुंदर पकवान बनाओ। पट् रस भोजनमें मन लाओ॥
था योग्य सब डार मसारो। व्यंजन को इहि भांति सुधारो॥
भोजनमें करिहो चतुराई। तो करिहैं सब बडी बडाई॥
भोजनशालाको शुचि राखो। कूडो करकट बाहर नाखो॥
बरतन जे आवें नित कामा। तिन्हें मांजि राखो शुचिठामा॥
स्थिर चितकर तुम करो रसोई। जो कछु वस्तु निकाम न होई॥
भोजनको जेते जन आवें। एक भावते ते सब पावें॥
रोसते मत होउ अधीरा। ढांकि राखु निज सकल शरीरा॥
स्तु धरो थालीमें या विधि। जो जानहिं तुमको सब बुधनिधि॥

ोहा–प्रमाणते भोजन धरो, जो जेहि अनुसर होय॥
छोटे मोटे सकलजन, छांडि न जावें कोय॥१०॥

ीखो समय २ कर गाना। जो अति श्रेष्ठ रु मंगलनाना॥
ाना तीन भांति विद्वाना। उत्तम मध्यम नीच बखाना॥
उत्तम भगवतके गुण जानो। मध्यम समय समय कर मानो॥
ीच गान गालियां जनावें। जामें दुष्ट शब्द मुख आवें॥
उत्तम मध्यममें चितधारो। नीचगान मुखते न निकारो॥
जो सखियां गावें लघुगाना। तो बरजो कहि अवगुण नाना॥
ेम सहित गालियां जो गावें। ते शुभ ठौर अनादर पावें॥

गालीते विगडें तिय सोई । ज्ञान शून्य जिनके हिय होई
जानो राग सोई तुम गाओ । नातर वृथा न लोग हँसाओ
अरु सीखो सुंदर प्रस्तावा । जो शिक्षाहित हृदय जनावा

दोहा–शुभ पुस्तक पढती रहो, जाते उपजे ज्ञान
सदा आपने लाभहित, करती रहु अनुमान ११

मातु पिता विवाह जब करिहैं । तब दूसर घर जानों परिहैं
रहि न सको तुम तहँ स्वाधीना । बैठीरहु बिठाय जहँ दीना
सासू ननँद और कछु कहिहैं । भलो बुरो सब सहनो परिहैं
जो किंचित उत्तर दे देहो । तौ सबमँह अपकीरति पैहो
जो राखोगी कोमलताई । तो तुम जीतोगी सुसराई
सुनि लीजो जो २ कछु कहैं । फिर पाछेते उतर न लहैं
करियो ताको अति मन लाई । जो कोउ कछु आज्ञा दे जा
देवर ननँद जेठके जाये । इनको तुम समझो न पराये
जियते इनको राखु पियारा । करौ न इनते नेक बिगार
तो ये दिवस सहज कट जाहीं। आन प्रयत्न और कछु नाहीं

दोहा–छोटे मोटे सकलजन, जब भोजन करि जांय
तब तुम सब बासननकों, स्वच्छकरो मनलाय १२

.. पीछे जीम रसोई । भोजन शाल शुद्ध कर धोई
... पाओ । तब घरकी नारिनमें जाओ

वात करो तहँ जाई । जासों कोउ दुलखन नाहिंआई ॥
रहो सदा निजधामा । करो होय घरमें जो कामा ॥
न फिरोगी द्वारे द्वारे । तो न कछू कहिहैं घरवारे ॥
: जिठानिनते मिल चलिये। तुच्छ वात पै कान न धरिये ॥
सो यह सिखाउ गुण नाना । या पढती रहु कथा पुराना॥
उन नारिन में जाई । जो सुशील विद्वान जनाई ॥
घरमें निरबल हो नारी । पै होंवे शुभ लक्षण वारी ॥
न सँग वैठत करो न शंकू । तो किंचित लागै न कलंकू॥
हा–खोटी संगतमें सुता, वैठो तुम मत जाय ॥
नातर सारी कीरती, करते देहु गँवाय॥१३॥
सु ससुरकी सेवा कीज्यो । उनकी आज्ञा पर चित दीज्यो॥
ाय बाप सासू ससुरे पति । इनको तुम दुर्लभ जानो अति॥
नकी सेव करे मनलाई । तो जगमें उत्तम फल पाई ॥
प्रसन्न हो देहिं अशीशा । तो प्रसन्न हुइ जाय महीशा ॥
ारि धर्म दूसर मत जानो । इन कहँ वडे पूज्य कर मानो ॥
जे इनकी नित पूजाकरतीं । ते युवती सुख संपति भरतीं ॥
जे करतीं इनका अपमाना । ते सहतीं यमपुर दुखनाना ॥
वे गृहस्थ में होयँ अभागी । इनकी दुराशीश जेहि लागी ॥

फूलें फलें नहीं यह नारी। जो सावें नित इनकी गारी॥
चाहो सुख संपति परिवारा। तो न करो इनका चित सारा॥
दोहा–जैसो प्रभु देवें तुम्हें, भूषण वसन रु स्थान
ताहीमें संतोष करु, मेरी सुता सयान॥ १४॥
सदा करो पतिके पद प्रेमा। समझो ताहि धर्म व्रत नेमा।
पति समान या जगके माहीं। नारिनके दूसरि गति नाहीं
चहो लोक परलोक बनावा। तो पतिसेवामें मन लावा
नारिनके पति सम गुरु जगमें। दृष्टि परे एकौ नहिं मनमें
चह गुणज्ञ चह होउ प्रवीना। चह कोउ अंधबधिर अतिदीना।
चह होवे क्रोधी अतिभारी। चह होवे बड दुरआचारी
जैसो तोर भाग्य में होई। मिलिहैं तस नाहैं संशय कोई
पै राखो तुम प्रेम अपारा। तो सुखसे होगी भव पार
चेली मत होउ साधु यतीकी। सेवा तजि निज प्राणपतीकी।
संगति मतकर पर पुरुषनकी। चह गृहस्थ चह साधुजननकी
दोहा–छोटोंको निजपुत्रसम, समको जानो भ्रात
अरु जो आयूमें बडे, तिन्हें विचारो तात॥१५
रहे न अब कोउ साधु अतीता। करे सकल पाखंडअनीत
अहै न उर विद्याकर लेपा। धूरत करैं पखंड रु भेप
नित नइ करैं नारियां चेली। कंठी बांध सबै उर मेली

दुष्टनके उर रहे अधर्मा। करें सदा ऐसे खलकर्मा॥
ता नकरु इनका पतियारा। ये नसायडारें कुल सारा॥
रें प्रतिष्ठा भंग तुम्हारी। ये जन नीच बड़े व्यभिचारी॥
जनीय नहिं ये पाखंडी। शूद्रवंश अविवेक अफंडी॥
ो चाहो अपना कल्याना। तो पति त्याग भजो मत आना॥
र्म ध्यान तीरथ व्रतनेमा। सबकर मूल एक पतिप्रेमा॥
ह उपदेश पढो मनलाई। दुहिता जगमें लेहु भलाई॥
ोहा—वेदशास्त्र सज्जन पुरुष, कहें सनातन धर्म॥
पर पुरुषन को प्रेम अति, है यह बडो अधर्म १६॥
ीय अहै घरकी रखवारी। ताते तुम राखो सुधि भारी॥
विना काम मत वस्तु बिगारो। अरु बेसुध कोउ चीज न डारो॥
रखो सावधानी मन माहीं। हैं गृहस्थ दुस्तर जगमाहीं॥
जो धनको व्यय विपुलकरोगी। तो दारिद्रता शीघ्र लहोगी॥
द्रव्यविना नहिं सरिहैं काजा। अरुसब ठौर लहहिं अतिलाजा॥
धनते नीच ऊंच पद पैहैं। इंद्र समान महा सुख लैहैं॥
यह कोउ शूर होय विद्वाना। विना द्रव्य पावे दुख नाना॥
ताते धन संचय करु भारी। सुता रहो तब सदा सुखारी॥
पै अनीत पर कान न करिहो। प्रभु देवे तामें मन भरिहो॥
ीक संतोष महाधन जानो। अहंकार मनमें मत ठानो॥

फूलें फलें नहीं वह नारी । जो रावें नित इनकी गारी ॥
चाहो सुख संपति परिवारा । तो न करो इनका चित खारा॥
दोहा–जैसो प्रभु देवें तुम्हें, भूषण वसन रु स्थान ॥
ताहीमें संतोष करु, येरी सुता सयान ॥ १४ ॥
सदा करो पतिके पद प्रेमा । समझो ताहि धर्म व्रत नेमा
पति समान या जगके माहीं । नारिनके दूसरि गति नाहीं
चहो लोक परलोक वनावा । तो पतिसेवामें मन लावा ।
नारिनके पति सम गुरु जगमें । दृष्टि परे एकौ नहिं मनमें ।
चह गुणज्ञ चह होउ प्रवीना।चह कोउ अंधबधिर अतिदीना
चह होवे क्रोधी अतिभारी । चह होवे वड दुरआचारी ।
जैसो तोर भाग्य में होई । मिलिहें तस नाहीं संशय कोई ।
पे राखो तुम प्रेम अपारा । तो सुखसे होगी भव पारा
चेली मत होउ साधु यतीकी । सेवा तजि निज प्राणपतीकी ।
संगति मतकर पर पुरुषनकी । चह गृहस्थ चह साधुजननकी
दोहा–छोटोंको निजपुत्रसम, समको जानो भ्रात
अरु जो आयूमें वडे, तिन्हें विचारो तात ॥१५
रहे न अव कोउ साधु अतीता । करे सकल पाखंडअनीता ।
अहै न उर वियाकर लेपा । धूरत करैं पखंड रु भेपा ॥
नित नइ करैं नारियां चेली । कंठी बांध सवै उर मेली ॥

नके उर रहै अधर्मा। करें सदा ऐसे खलकर्मा॥
ा नकरु इनका पतियारा। ये नसायडारें कुल सारा॥
ं प्रतिष्ठा भंग तुम्हारी। ये जन नीच बडे व्यभिचारी॥
ननीय नहिं ये पाखंडी। शूद्रवंश अविवेक अफंडी॥
चाहो अपना कल्याना। तो पति त्याग भजो मत आना॥
र्म ध्यान तीरथ व्रतनेमा। सबकर मूल एक पतिप्रेमा॥
ह उपदेश पढो मनलाई। दुहिता जगमें लेहु भलाई॥
ोहा—वेदशास्त्र सज्जन पुरुष, कहैं सनातन धर्म॥
पर पुरुषन को प्रेम अति, है यह वडो अधर्म१६॥
ाय अहै घरकी रखवारी। ताते तुम राखो सुधि भारी॥
बेना काम मत वस्तु बिगारो। अरु वेसुध कोउ चीज न डारो॥
खो सावधानी मन माहीं। हैं गृहस्थ दुस्तर जगमाहीं॥
ो धनको व्यय विपुलकरोगी। तो दरिद्रता शीघ्र लहोगी॥
द्रव्यविना नहिं सरिहैं काजा। अरुसब ठौर लहहिं अतिलाजा॥
धनते नीच ऊंच पद पैहैं। इंद्र समान महा सुख लैहैं॥
वह कोउ शूर होय विद्वाना। विना द्रव्य पावे दुख नाना॥
ाते धन संचय करु भारी। सुता रहो तब सदा सुखारी॥
ो अनीत पर कान न करिहो। प्रभु देवे तामें मन भरिहो॥
ेक संतोष महाधन जानो। अहंकार मनमें मत ठानो॥

दोहा–समय पायधन व्ययकरो, लहियो यश समुदाः
अरु पेयो अस संपदा, मुखते कही न जाय॥१७॥
पुत्री गर्भवती जब होई । करो ताहि रक्षा मन गोई
ऐसी वस्तु कबहुँ जनि खाओ । जाते अपनो गर्भ नसाओ
खावहु श्रेष्ठ पदारथ नाना । जाते गर्भ होय बलवाना
अतिश्रमकरिकोउकाजनकरियो। ऊंचे नीचे पांव न धरियो
जो तुम उष्णवस्तु कोउ खाओ।तो निश्चय निर्बल फलपाओ
जे कोऊ होवें जड नारी । खावें भस्म गार ईंटारी
तिनके पुत्र पुत्रि बलहीना । और होहिं आयूकर छीना
रोग ग्रसित तिनके संताना । बचिहिं नहिं उपाय किय नान
दुर्बल हस्त पांव हुइ जावे । उदर भार सहि सका न जा
तब संतान और वे माता । पावें सो दुख लिखा न जात
दोहा–ठीक भेदजाने नहीं, पुनि वे युवति अजान
कहैं खोट लागो मुझे, छुवत आन संतान ॥१
या छुइ गइ कोउ नारि पराई । या कोऊ करतूत कराइ
तब वे नीच जाति पै जावें । झाडा फूँकी बहुत करावें
या भैरव देवीके पाहीं । जहँ कोली नित धूम मचाहीं
विनय करें तिन पै जा नारी । युग कर जोर भूमि शिरधारी
तेल सिंदूर और पकवा[illegible]वें तहां वे व्यंजन नान

मूरत कछुकं द्रव्य भी लेवें। ये दुखकी मारी सब देवें ॥
नहिं जाने ठग विद्या भारी। वे भोरी अज्ञान विचारी ॥
रोगहीन संतान न होवे। पर इतनो धन वृथाहि खोवे ॥
आकर नीचनके छल माहीं। हाथ न ते निज पुत्र गँवाहीं ॥
येहैं सकल झूँठ जंजाला। जाल मांहिं मत आवहु बाला ॥

दोहा–रोग न बिन औषध मिटे, अहै सकल पाखंड॥
लोभ कछू होवे नहीं, बाढे रोग प्रचंड ॥ १९ ॥

जब होवे संतान तुम्हारी। तिहि पालो कुटुंब रखवारी ॥
बालकको नित मज्जन करियो। स्वच्छ वसन तिहिके तनुधरियो
प्रमाणते करियो नित भोजन। जेहिते बालक रह अरोग तन॥
जो अखाय ताको मत खाओ। उत्तम वस्तु काममें लाओ ॥
जब बालक कछु समझन लागे। और इतै उत डोलन लागे ॥
तब राखो पूरी सवधानी। खावे नहीं गार अरुवानी ॥
जब बोलन लागे कछुबानी। तो सिखऊ मृदुवचन सयानी ॥
सब कर नाम उसे समुझाई। सिखलाओ सब भांति जनाई ॥
को देवे काहूको गारी। तो समझा देओ ललकारी ॥
करिहो बहुत दुलार सयानी। तो बिगरहि बालक मनमानी॥

दोहा–जो लक्षण देखो बुरे, ताको करदो दूर ॥
नातर बालक आयुभर, बनो रहेगो क्रूर॥२०॥

जब बालक कछु होय सयाना । भिन्न २ सब वर्ण बताना ॥
बालक अधिक मातु पहँ रहई सो सब गुण माताके लहई ॥
याते तुम रहु सदा सुचाली । बालक होवें नहीं कुचाली ॥
करु प्रबंध अस उत्तम जानी । जाते हो बालक गुण खानी ॥
वियालयमें सदा पठाओ । शुभशिक्षा पर ध्यानलगाओ ॥
पढ़नेमें मत करो दुलारा । मूर्ख रहहि नतु बाल तुम्हारा ॥
कुपुत्र ते बिगरे कुल सारा।विना मान्य रहि जाय कुमारा ॥
चाहे पुत्र पुत्री कोउ होई । विनुभयके सुधरे नहिं कोई ॥
जो चाहो निजकुल अकलंका । तो ताडनमें करो न शंका ॥
बिगरे जो बालकपन माहीं । ते आयूभर सुधरें नाहीं ॥

दोहा—बुरीदशा तिनकी सदा, जिनकी चाल कुचाल॥
जापें अपयशको लहें, कुटुंब सहित वे बाल २१॥

जौलौं कछु विद्वान न जानो । तौलौं मत वियाहकी ठानो ॥
बाल विराह करें अज्ञाना । तिनके सुत पावें दुख नाना ॥
विन विद्या किमि करें कमाई । ज्यों त्यों करि हैं पेट भराई॥
पै लडकी पावे दुख भारी । पराधीन जो दीन विचारी ॥
देवे मातुपिताको गारी । कह मोकूं क्यों कूप न डारी ॥
अरु देवें निजकुलको शापा । वो ताकर नहिं होय पशापा ॥

जे कुलमें कन्या दुख पावें । ते कुल अवशि नाश होजावें ॥
सुता चहो निजकर कल्याना । तो मत लघुबालक परमाना॥
जब लगि वे समर्थ नहिं होवें । तबलगि वृथा समय नाहिं खोवें
करहिं विद्यामें निपुनाई । और बहुत सीखें चतुराई ॥

दोहा–जब उद्यम करने लगें, करके उत्तम काम ॥
तब तुम उनके व्याहहित, ढूँढ़ो सुंदर धाम ॥२२॥

जब चाहो लड़की परणाना । वर ढूंढो उत्तम कुलवाना ॥
छोटो अरु बहु मोटो नाहीं । ठाढ़ो होय आयुके माहीं ॥
तनमें कछु पीड़ा न जनावे । उत्तम कुलको बाल कहावे॥
सब धावनमें होय समर्था । अरु साहसी बड़ो निज अर्था॥
सब महँ माननीय विद्वाना । गृहस्थमें अतिचतुर सुजाना ॥
बहु न होय घरमें धनवाना । पै उद्यमी होय गुणवाना ॥
तो कन्या अति चैन करेगी । सदा परम आनंद लहैगी ॥
देगी वर नितनई असीसा । माय बाप चिरजिवो गिरीसा ॥
देखोगे प्रसन्न निज कन्या । अपनेको मानोगी धन्या ॥
जो करिहो ऐस चतुराई । तो निश्चय तुम लेहु भलाई ॥

दोहा–हे पुत्री या रीत ते, करति रहो व्यवहार ॥
और रहो आनंदमें, सादिन सकल परिवार ॥२३॥

विवाहमें अति व्यय नहिं कीजो।निकट होय उतनो धन दीजो।
जाकी बुधि होतीहे पोची । ते कोउ कर्म करें नाहिं सोची ।
ऋण कीन्हे पावहु दुखनाना। और सहो जगमें अपमाना ।
पुनि कोऊ वनिहे न सहाई । उलटी सब मिल करें हँसाई ।
जो शोभा हित ऋणकर लेवें । पुनि ते नाकहँसी सँग देवें ॥
जाके शिर कछु ऋण नहिं होवे। सो निज घरमें निर्भय सोवे ॥
चह कोउ कैसो शूर न होई। ऋण लेके कायर है सोई ॥
यातें सुता समझकर काजा । जावे कबहूँ न पावे लाजा ॥
सदा राखु निज घरमें ध्याना। लेजावे न वस्तु कोउ आना ॥
जे पराति निज गृहमें होई । याते अति व्यय करौ न कोई॥
दोहा—तनपे किंचित वसन नहिं; पूरो मिलिहें न अन्न ॥
पै ऋण कछु देनो नहीं, तासन कोउ न प्रसन्न२४॥
जब कुंटुंबवाली हुइ जाओ । अरु नारिनमें श्रेष्ठ कहाओ ॥
तब राखो सबकी सुधि भारी। अरु बोलो मृदुवचन उचारी॥
सबको उत्तम सीख सिखाओ। अति पवित्र निजप्रकृतिजनाओ
भाखो बड़पनेकी बानी । तो निश्चय कहलाउ सयानी ॥
... राखहिं बड़मान तुम्हारा। जो तुम कहु मो करें प्रचारा॥
... पूछो सबकी कुशलाई।अति नीको निज प्रेम जनाई ॥

पूछो खान पानकी सबते। छोटे मोटे सकल जननते ॥
काहूते दुभांत नाहिं करियो। एक भावते सबको गिनियो ॥
जो घरमें कोउ कराहिं अनीती। तो तेहिं समझाओ करिप्रीती ॥
कहिहें कोउ ताको लघुबानी। ताको उर जनि राखुसयानी ॥

दोहा–आपसमें जो लरहिं कोउ, समझाओ इहि भांति॥
उरमें रह विरोध कछु, दिन २ प्रीति जनाति ॥ २५॥

सबै राख इहि विधि समुझाई। जो न परस्परमें बिलगाई ॥
जो न होय घरमें इकताई। तो संपदा नष्ट हुइजाई ॥
जेतो रहे सबन उर स्नेहा। तितो रहे सुख संपद गेहा ॥
अरु भय रह दुष्टन उर माहीं। कछु कुचालकरि सकिहं नाहीं॥
भारी बंधी तोर नहिं सकिहैं। चह कोऊ कितना वलकरिहैं॥
लकरी एक २ हर कोई। करे टूक चह निर्बल होई ॥
अरु कोउ काज परे घर माहीं। ते सबते सहसा हुइ जाहीं ॥
जो रहते आपसमें वामा। तिनके नाहिं सुधरे कोउ कामा ॥
फूट बहादेवे घर बारा। अरु लावे दारिद्र दुख सारा ॥
संपति नाश करे अति भारी। चह होवे कुवेर भंडारी ॥

दोहा–वैर सकल संपत हरे, और करे दुख द्वंद्व ॥
सुता वैर तजि स्नेह करु, तो लहि हो आनंद॥२६॥

जेती होवे पूत पतोहू । सबपै राख समान सनेहू ॥
यह विधि पुत्र बधुनते रहऊ । सहिलैयें वे जो तुम कहऊ ॥
सदा चहो उनका हितनीका । और न कबहु करो मनफीका॥
देहु सदा उत्तम सिख सोई । जाते द्रोह करें नहिं कोई ॥
राखहिं प्रीति परस्पर भारी । लहें सदा सुख सदन मझारी ॥
करिहें नाहिं सुसंगत ऐसी । बिगरहि नारि चाह हो कैसी ॥
सदा सुनाओ अस उपदेशा । जातें मनमें रहे न क्लेशा ॥
करें काज गृहके मन लाई । निजचितमें आनंद बढ़ाई ॥
राखहिं सारी वस्तु सुधारी । कारज वृथा बिगाड नडारी ॥
सहन शील अति रहें सयानी । सदा सबनते कहे सुबानी ॥

दोहा--पूछि करे वा कामको, जाको जानति नाहिं ॥
बिन पूछे जे कोउ करे, ते सब माहिं लजाहिं२७॥

बहुको कहन चहो कछुबानी । तो इकंतमें कहो सयानी॥
सबकहँ मान करो जनि भंगा । दुख पावे नतु ताको अंगा ॥
सिख इकंतमहँ करे प्रभावा । तससबमहँतिहिमनहिनभावा॥
आज्ञा मानहिं पूत पतोहू । जब तुम उचित समयपर कहहू ॥
कछू कुलक्षण ताई । तेहि ताडन कर देहु मिटाई ॥
कबहूं स्वाधीना । तो बिगराहिं चह होउप्रवीना ॥

याते जो राखो मन जानी। तो वह कहैं तुम्हें कटुवानी॥
बालपने पितु चौकस कर्ता। युवा भये डांटे निजभर्ता॥
जरठ कि पुत्र करे रखवारी। स्वतंत्रतें बिगरें तिय सारी॥
यह है वचन नीत परमाना। रहिहैं इहि विधि नारि सुजाना॥
दोहा—अपने घरकी बात कछु, कहै न अनते जाय॥
सुता करो उपदेश अस, पुत्रवधू निज पाय॥२८॥
जान लगे जब नैहरमाहीं। तब कहि देओ अस समुझाहीं॥
जो कछु भेद यहां का कैहो। तो पुनि यहँ नहिं आवन पैहो॥
अरु कुचाल कछुभी सुनलेहूं। तो निसार घर बाहर देहूं॥
मेला भीड जहां तुम जानो। तामें जानेकी मत ठानो॥
चह होवे कोउ देउ स्थाना। होवे चह कोउ खेल महाना॥
पै जावें जहँ पुरुष अपारा। तहँ ते तुम करु सदा निवारा॥
भीर माहिं जावें कोउ नारी। ताकि प्रतिष्ठा लेहिं अनारी॥
उत्तम कुलकी स्त्रियां कहातीं।भीर माहिं कबहूं नहिं जातीं॥
जे रहँ कोउ कुलक्षणि भारी। ते मेले महँ जावहिं नारी॥
लाज होय जाके उर माहीं। ते अस ठौर जान नहिं चाहीं॥
दोहा—नारि भेष बनके जहां, नाचहिं पुरुष अयान
और अधिक उत्साहते, मुखते कहैं कुबान॥२९

अरु होता होवे जहँ रासा । तहँ जानेकी करो न आसा ॥
इहि विधि पुत्र बधुहि समुझाई । वाको नैहर देहु पठाई ॥
निज पुत्रीकोभी इहिभांती । सदा रहो उपदेश सुनाती ॥
अरु ऐसे शुभ कर्म सिखाओ । जे सब महँ सज्ञानकहाओ ॥
गाना तीन भांति दरसाया । उत्तम मध्यम नीच बताया ॥
उत्तम मध्यम गान सिखाओ । नीच गान कबहूं न सुनाओ
विद्यामें करि देहु प्रवीना । तो करिहैं वे काम नवीना ॥
काहूके न जालमहँ आवें । अरु नारिनमें कीरति पावें ॥
और सिखावहु अस चतुराई । सुंदर भोजन लेय बनाई ॥
घरमें राखे निर्मलताई । कूडाकरकट देय फंकाई ॥

दोहा—निजपुत्रीको हे सुता, सीनो देहु सिखाय ॥
पावे वह आनंद अति, अरु आदर अतिपाय॥२०॥

देहु सकल विधिते समुझाई । अटकी नाहिं रहै ससुराई ॥
कहु प्रसन्न रहु सदासुखारी । जैसो विधि दीन्हों घरबारी ॥
दौर जिठानिन ते मिलराहिहो । तो ससुराल महा सुख पइहो॥
कहियो जाने कोउते कटुवानी। करियो नाहिं कछु कपटसयानी
अरु कछु काम होय घरमाहीं । तामें तू आलसकर नाहीं ॥
... पैते उप लेहु भलाई । ते शुभ कर्म करों मन लाई ॥

जेहि कारन हो अपयशभारी । ते न करो, तुम सुता हमारी ॥
अरु जो धर्म नारिन को होई । करन कहौं तिहिको मन गोई ॥
इहि प्रकार सुंदर सिख देहू । जगमें सुता महायश लेहू ॥
जो जो सिख पहले पढिलैहो । ते सब निज पुत्रिनते कैहो ॥

दोहा–वालावस्थामें सुता, जितो २ पढ लेहु ॥
सुख संपत आनंद यश, तितो२तुम लेहु ३१॥

जे पढिहैं इहि को धर ध्याना । ते कन्या यश लेय महाना ॥
अरु जगमें आदर अति पावे । सब नारिनमें श्रेष्ठ कहावे ॥
जे चलि हैं याके अनुसारा । ते लइ हैं शोभा संसारा ॥
लोक और परलोक मनावे । जो या पुस्तक में मन लावे ॥
धर्मधुरंधर धीर सयानी । अरु होवे कन्या गुणखानी ॥
पावेगी वह बडी बडाई । अरु लेगी सन्मान सदाई ॥
जे कन्या विद्या नहिं पढिहैं । तिनके पुत्र पुत्रि जड रहिहैं ॥
यह मैं निज मनमें अनुमाना । माता ते सुधरे संताना ॥
ताते मैं कछु उपदेश बनाई । या पुस्तकमें दिये जनाई ॥
सकल सुता पढि हैं मनलाई । तो श्रम मोर सफल हो जाई॥

इति श्रीकन्याहितकारिणी सम्पूर्णा ।

श्रीः ।

रामायणसार ॥

बालकाण्ड ।

(सवैया)

एक समय दशरत्थ नरेशके, चित्तमें आय गई यह ग्लानी ॥
और समें प्रभु दीन्हें मोहीपर । पूतन एकहु दीन्ह भवानी ॥
मिलि कौशिक आदि वसिष्ठ मुनी। करि यज्ञविभागदियो समरानी
प्रगटे रघुवीर भरत्त बडे लगु । लक्ष्मण और शत्रुघ्न सुज्ञानी ॥
बाल चरित्रतें मातरुतात । रिझाय कुटुंब प्रजा सुखकारी॥
मुनि कौशिकके संग जाय प्रभू, करवादिये यज्ञ निशाचरमारी
जात सियाके स्वयम्वर को मगमें, मुनिनार अहिल्यहि तारी ॥
करि चापके खंड हराये भृगूपति, राम वरी सिय सुंदरि नारी ॥

अयोध्या काण्ड ।

कौशलके पति एकदिना करले, दर्पण मुख देखन लागे ॥
आयु चतुर्थ लखी मनमें अरु, केश भि श्वेतभे लोचन आगे॥
जके हित ठान लियो बनवास, रु रामको रामहिं सोंपन लागे
कि मूल भई तब, बातें कही कटु केकई आगे २

थाति रहे वरदान दोऊ वह, रानिने राउते मांग लिये ॥
भर्तको हो युवराज यहांको पै, रामको तो वनवास दिये ॥
लक्ष्मण सीयको साथलिये, वनमें रघुनाथ पयान किये ॥
राउ गये सुरलोक भरत वन, जायके चर्ण खडाउलिये॥४॥

आरण्य काण्ड ।

वैठी जब सीय शृंगार किये तव, आय जयंतने चोंच कि मारी
या अपराधमें सींकके चापतें, ताको कियो इक चक्षु खरारी॥
आय गये पुनि अत्रिके आश्रम, ले संग वंधु अरु निज नारी॥
गोदावरीके तट वास कियो तहँ,सूर्पनखाकि छवीको बिगारी ५
खर दूपण आय चढ्यो प्रभुपै, तिहिको रण माहिं परास्त कियो
कपटी मृगके जब मारनके हित, रामने हाथमें वाणलियो ॥
तब रावणने लखि सूनो गृहे निज,साधुको भेप वनायलियो ॥
हरलेय चल्यो वैदेहिको पै, मग माहिं जटायु जीवदियो ६॥

किष्किंधाकाण्ड ।

सीय वियोगते व्याकुल राम, गये ऋषिमूक समीप भवानी ॥
तहँ हनुमान [illegible] ज सुग्रीव तें मित्रता ठानी ॥
[illegible] । सब रामते कीन्हबखानी
[illegible] मित्रको शत्रुहिं जानी७
[illegible] मारि लियो [illegible]

अंगदको युवराज दियो अरु, वालिकि नारि बंधादियो धीरा॥
अंगद औ हनुमान यती अरु, जेते रहे कपि सुंदर वीरा ॥
ते निकसे सिय हेरनको, औ चले गये हेरत सागर तीरा॥८॥

सुंदरकाण्ड ।

सिंधुको लांघि चले हनुमान, औ मारग माहिं निशाचर मारा॥
सांपनकी जननी सुरसा पुनि, आयके राहमें कीन्ह पसारा ॥
तिहि मांहिं है बाहर आये हनू, तब देन लगी वो अशीषअपारा
लंकमें जाय प्रवेश भयो, अरुभेट्यो विभीषन वायुकुमारा९॥
मिलि सीयते मुंदरि ताहि दई, हनु बागमें वृक्ष उपारन लागे॥
व्याकुलहै रखवारे विचारे, और लंकपतीको पुकारन भागे ॥
चढ़ि कोट कंगूर लंगूर हनू, सब लंकमें आग लगावन लागे॥
जारिके लंकपुरीको हनू, फिर आयके रामके पांयन लागे१०

लंकाकाण्ड ।

नल नीलते सिंधुमें सेतु बंधायके, सागर पार भये रघुवीरा ॥
सुत वालिके अंगदको पठयो, दश आननपै लखिके रणधीरा॥
अंगदने समुझायो बहू विधि, पै नाहिं मानत रावण वीरा ॥
इत लक्ष्मण औ उत मेघनाद, दोउ वीर भिरे उरमें धरि धीरा११
सौमित्रके शक्ति लगी तब जाय, हनू इक शैल तहां ले आये ॥
जगे तेहि औषधते उठि, मेघनाद यम लोक पठाये ॥

कुम्भकर्ण अरु और निसाचर, मारि सबै कपि धूर मिलाये ॥
राम कियो बध रावणको अरु, लंकको राज बिभीषण पाये १२

उत्तरकाण्ड ।

चढि पुष्पकपै लिये जानकिको, रघुनाथ अयोध्यापयानकियो ॥
सीय वियोगमें जो २ कियो, ते सबै मगमें दिखराय दियो ॥
जब आये अयोध्याके पास बली, हनुमानको भर्तपै भेजदियो ॥
प्रभु आवन की सुधि पाइजबै, तब भर्तआनंद महानलियो १३ ॥
आय अगौनि को भर्त अरू, पुरके नर नारि मिले सब धाई ॥
कुलपूज्य वशिष्ठके पायनमें गिरि, राम मिले फिर चारिहुं भाई ॥
केकई मातु कौशल्या सुमित्राहिं, ते पुनि जायमिले रघुराई ॥
रघुनाथ को राज दियो गुरुने, तब सारो कुटुंब प्रजा हर्षाई १४ ॥

दोहा—गोवर्द्धन पूरण कियो, रामायण शुचि सार ॥
क्षमा करेंगे भूलको, जे जन बुद्धि अगार ॥१॥

परमेश्वरकी बड़ाई ।

बिनु पद चले सुने बिनु काना। कर बिनु कर्म करे विधिनाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनुवाणी बक्ता बड़ योगी ॥
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। गहे घ्राण बिनु बास अशेषा ॥
अस सब भांति अलौकिककरणी। महिमा जासु जाय नहिं बरणी ।

तुलसीदास.

(सत्यता)

सांचबरोबर तप नहीं । झूँठ बरोबर पाप ॥
जाके हिरदे सांच है । ताके हिरदे आप ॥
सत्य नावपर जे चढत।यह भवसिंधु अपार ॥
आप बचे अरु औरको । देवे पार उतार ॥
जहाँ सत्य तहँ धर्म है। जहां सत्य तँह योग॥
जहाँ सत्य तहँ श्री रहत।जहां सत्य तहँ भोग॥
वायु बहत है सत्यते । जलत सत्यते आग ॥
सत्यहिते धरती थँभी।सत्य होत बड़ भाग ॥
सत्य भाव को गहहु तुम। तजो झूँठको भाव ॥
नहिंअसत्य सम औरहै।पातक सुनु मृगराव॥
(नीतिसु).

(विद्या)

छप्पय.

विद्या नरको रूप भूप आदर सर सावे ॥
विद्या धन अति गुप्त आपको आप रखावे ॥
विद्या गुरू महान भोग सुख करत परम हित ॥
विद्या देश विदेश बीचमें होत मातु पित ॥
विद्या इष्ट समान है सदा देह रक्षा करत ॥
विद्यारत्नविहीननर धरतीमें पशुसम चरत ॥

सवैया,

ओभा न देय विजायट बाहुमें हारहु चंद्रसमान सजाये ॥
फूलकी माल वनाय लसे तन, धोयके चंदन स्वच्छ लगाये ॥
पान हु खाय सुवस्त्र धरे भल सूंघे सुगंध हु वार वढाये ॥
वागविभूषणहीन न सोहत सारे अलंकृत जात नसाये ॥
(नीति)

(लोभ)

लोभ महारिपु देहमें । सब दुःखोंकी खान ॥
पाप मूल अरु प्राणहर । तजै ताहि मतिमान ॥
यशी पुरुषके विमल यश । गुणियोंके गुण नेह ॥
तनक लोभमें नसत सब । फूल परे जिमि देह ॥
देह धर्म कुल धर्म अरु । तजें तुरत पितु मात ॥
लोभ विवशनर करतहें । मित्र विप्र गुरु घात ॥
क्रोध काम हंकार ते । ल बलवान ॥
जाके व नर प्रान ॥
जैसी । आय ॥
पाय ॥
ो मूल ॥
शूल

क्रोध करत फिर मोहको । मोह चित्त भ्रम तास ॥
चित्त भ्रमते बुधि नसत । बुद्धि नासते नास ॥

(नीति.)

संतोष

नहिं लखपति नहिं कोटि पति । नहिं कुबेर को होइ ॥
संतोषी जो पाय सुख । रहै कोनमें सोइ ॥
पेट भरें अपमान सहि । मुख की शोभा जाय ॥
तन दुख सहि जो धृति गहै । नित २ श्री अधिकाय ॥
बहुधा लज्जित होतहै । जे पेटारथि लोग ॥
उदर दुःख सहिबो भलो । नहिं चित दुखनो योग ॥
यह संतोष सु संपदा । हमें करो धनवान ॥
यद्यपि जगमें बहुत धन । नहिं कोउ तोहि समान ॥

(नीति)

(भोजन)

तन रक्षा अरु भजन लगि, भोजन करें सुजान ॥
भोजन लगि जो तन लखें, वे नर बड़े अजान ॥
भोज सोइ सराहिये, जो शरीर सुख दाइ ॥
ह होतहै, जो मितिसे अधिकाइ ॥

रसमय गुणमय स्वादमय, विन इच्छा विपतूल ॥
सूखी रोटी भूँखमें, होत मधुर सख मूल ॥

चौपाई।

थोर अहार करे नर जोई। कठिन समय पावे सुख सोई ॥
बहुत खाय जो पेट बढ़ावे। विपति काल सो प्राण गँवावे ॥

(नीति.)

(उचित शिक्षा) चौपाई।

निज घरनी चहुँ आवे प्रानी। दीजे तेहिं अहार अरु पानी ॥
सत्य वचन नहिंतजिये कवहूं। संकट परे प्राणको जवहूं ॥
उत्तम कर्मवीच तजि आलस। करु विद्या विनोद निजमानस॥
चुगली रोष क्रोध नाहिं कीजे। असत वस्तु कबहूं नहिंलीजे ॥
जो नर होवे सहित पखंडा। करहु वैर तेहि साथ अखंडा॥
जो कुमंत्र कोउ सिखवे तोहीं। कहहु न समझ परत यहमोहीं ॥
चुगलीसुनत बहिर सम होऊ। फिर फिर कहे सुनहु जिनसोऊ
निज गौरव निज मति मतकहहू। परतेसुनि सकुचित ह्वै रहहू ॥
धूरत लोलुप शठ खल कर्मी। नास्तिक पतित खंड छलधर्मी॥
दैव योगते ये कहुं आवें। दूरहि ते बोलन नहिं पावें ॥

दोहा—मातु पिता अरु श्वशुर गुरु, और पतिव्रत नारि ॥
सज्जन जो बोलैं वचन, करु विश्वास विचारि ॥

सावधान होइ पालिये, सदा धर्म निज देह ॥
करु विश्वास न ताहि जो, नौकर हो निज गेह ॥
दीन वृद्ध बालक त्रिया, विन अपराध अनाथ ॥
तिनकी रक्षा कीजिये, वित्त बुद्धि वल साथ ॥
निद्रा भोजन कर्म में, आतुरता शुभ साज ॥
आतुरता नहिं कीजिये धर्म कर्म के काज ॥
संगति कीजे साधुकी, जो पंडित मतिमान ॥
साधारण हू वचनमें, निकसत मुखते ज्ञान ॥
मधुर मनोहर सत्ययुत, वचन बोलिये नित्य ॥
अक्षर कम अरु अर्थ वहु, जो नहिं होय अनित्य ॥
ब्रह्म मुहूरत में उठहु, करहु गुरू के ध्यान ॥
भजन करहु जगदीशको, जातें सव कल्यान ॥
चलत फिरत वैठत उठत, सोवत जागत आदि ॥
ताको नित ध्यावतरहो, जो प्रभु परम अनादि ॥
कन्या औ संक्षेपसे, कियो धर्म उपदेश ॥
औरो विधि तुम मानियो, जो कछु शास्त्रनिदेश ॥

(नीति)

(पहेली)

कर बोले करही सुने, श्रवण सुने नहिं ताहि ॥
कहे पहेली वीरवर, सुनिये अकवर शाह ॥ नाडी.
इक तरवर अरु आधोनाम; अर्थकरो केहि छांडोग्राम ॥
नीम.
पानीमें निशिदिन रहे, जाके हाड न मास ॥
काम करे तरवारको, फिर पानीमें वास ॥
कुम्हारकाडोरा.
खेतमें उपजे सवकोउ खाय, घरमें उपजे घर वहजाय ॥ फूट.
एक अचंभा देखोचल, सूखी लकड़ी लागे फल ॥
जो कोऊ उस फलको खाय, पेड़ छोड वह अन्त न जाय ॥
वरछी.
दोहा–मेरे मनमें लगरही, वहुत दिननकी चाह ॥
ते तुमने पूरण करी, धन्य हमारे नाह ॥
जन्म वंश अवदीच्यमें, गोवर्द्धन मम नाम ॥
पिता मोर जैलालजी, व्रजपुर मेरो ग्राम ॥
सम्वत् विक्रम भूपको, शशि ग्रह अडतालीश॥
माघ शुक्ल तिथि दूजको, पूर कियो जगदीश ॥
इति।